'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Global Impact Factor – 0.565 (2014) & 0.676 (2015) Vol. 2 Issue. 4
ISSN :2348-7143 (Online)
Oct. - Dec.- 2015

"आदिवासी लोकजीवन में लोकनृत्य का स्थान"

प्रा. डॉ. जयश्री गावित
'सुमानिक', प्लॉट नं. २२,
सिद्धि विनायक कॉलनी, देवपूर, धुळे

भारतीय संस्कृति को संसार की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध होने का गौरव प्रदान किया जाता है । आर्यो के आगमन से भी पहले यहाँ कई आदिम जातियाँ थी जिन्हें आगे चलकर आदिवासी कहा जाने लगा । इन आदिवासी जनजातियों की अपनी एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है । आगे चलकर इन्हीं आर्य-अनार्य और अन्य अनेक आगत प्रजातियों ने मिलकर हमारी सतरंगी संस्कृति का निर्माण किया है । भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना को समझने के लिए ये जनजातियाँ अपरिहार्य घटक के रुप में है । दुसरे अर्थो में ये आर्य-पूर्व भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करती आई है । ये अपने आदिम विश्वासों, प्रकृति-प्रेम तथा आक्रमणकारियोंद्वारा किया गए शोषण के फलस्वरुप वनांचल में रहते आए है ।

भारत में पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी-मध्य एवं पश्चिम खान्देश में (वर्तमान नंदुरबार एवं जलगांव जिला) गोण्ड, वारली, महादेव कोली, माडिया, कोकणी, ठाकर, कोरकू, पावरा, डोंगरी भील, बर्डी भील, कोटला, भील, धानका, पारधी, दुबळा, आंबुर्डे, खोलचे, गावित-मावची आदि अनेक जनजातियाँ पाई जाती है । भारत राष्ट्र के लगभग २० प्रतिशत भाग में आदिवासी लोग निवास करते है । राष्ट्र क ८० प्रतिशत वनक्षेत्र में इनकी बस्तियाँ है । सम्पूर्ण भारत भर की आदिवासी जनजनतियों की अपनी-अपनी बोलियाँ, रितीरिवाज, उत्सव, व्रत, त्यौहार, रहन-सहन आदि में विभिन्नता होते हुए भी कुछ समान तत्त्व भी है ।

संक्षेप में प्रत्येक आदिवासी जनजाति का सामाजिक, सांस्कृतिक स्वरुप भिन-भिन्न है । लेकिन इन समस्त जनजातियों मे कुछ समान मूलभूत तत्त्व पाए जाते है । तत्त्वों की इसी समानता के कारण भारत की जनजातियाँ, एकसूत्र में बंधी हुई है । उनमें से प्रमुख एक तत्त्व है, लोकनृत्य महाराष्ट्र भूमि में शास्त्रीय नृत्यों क अतिरिक्त लोकनृत्यों का अक्षय भण्डार है । यद्यपि महाराष्ट्र के विभिन्न अंचलो में भिन्न-भिन्न प्रकार के नृत्य किए जाते है तथापि यह ज्ञात होता है कि उनक बाहरी रूपों में स्थानीय विशेषताएँ होती है । आन्तारिक रूप से उन सब में महाराष्ट्रीय जीवन के तत्त्व मौजूद है । इसप्रकार उनमें जो विभिन्नताएँ है वे आधार भूत विभिन्नताएँ न होकर केवल बाहरी भेद है ।

जनजीवन में जहाँ भी भावुकता केक्षण अथवा उत्सव, त्यौहार, विवाह आदि अवसर आते है ऐसे में मनुष्य क अंर्तमन की गहनतम भावनाओं को रोकना असंभव हो जाता है और जन्म लेता है नृत्य । सामाजिक जीवन का कोष कहलानेवाले इन लोकनृत्यों के जातिय एकता को संभाले रखा है ।

आदिवासी संस्कृति में भी लोकनृत्यों की भरमार है, वह इनक जीवन क अविभाज्य अंग बन चुक है, आदिवासियों क सभी नृत्य लोकनृत्य है और सामूहिक है, उनका वर्णन वे ही कर सकेंगे । जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इन नृत्यों का आनंद उठाया है, इन लोकनृत्यों को सिखने क लिए किसी नृत्यशाला में जाने की आवश्यकता नहीं, अबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, भूखा-प्यासा हर कोई नृत्य करता है। स्वयंस्फूर्ती से करता है । स्त्री-पुरुष एक दुसरे के कमर में हाथ डालकर निर्मल, निपाक मनसे नृत्य में तल्लिन हो जाते है । कोई किसे आग्रह नहीं करेगा, कोई इसे उकसाएगा नही, कोई किससे छेडखानी नही करेगा, खुले-मदमस्त वातावरण में हर कोई हिस्सा लेगा नृत्य में । लोकनृत्य का मूलभूत तत्त्व यानि उत्साह, आनंद, फुर्ती जोशिलापन, लय, सूर आदि का सुंदर संगम । आदिवासियों क जीवन मे जो जोशिलापन है, अंग-अंग में जो स्फुर्ती है, शायद नृत्य क कारण ही है । उनक जीवन में नृत्यो-गीतों का अटल स्थान है । नृत्यों-गीतों के बिना उनका एक भी कार्य सम्पन्न नहीं होगा, जितनी जी-तोड मेहनत वे करेंगे उतना आनंद वे नृत्य करके लेंगे । वे काम क लिए मना नहीं करेंगे और नृत्य के लिए भी सदैच तैय्यार रहेंगे । दिनभर काम करेंगे और रातभर नाचेंगे बिना किस थकान क बिना किसी रुकावट के एक जुनूस सा छा जाता है, उनमें ।

पहाड़ी - टिलों पर रहनेवाला, बियाँबान में निडर होकर घुमनेवाला, जानलेवा खतरनाक जानवरों से पंजे लढानेवाला अपितु शहरी लोगों से भयभीत होकर दूर भागनेवाला प्रकृतिपुत्र की संज्ञा से अभिहित, प्रकृति ही जिनक लिए सबकुछ है, प्रकृति उनका अंतरंग जाननेवाली सखी है, सर्वहारा दु:खी, हताश, निराश, आदिवासी दुनियादारी से दूर अकेला, इसी प्रकृति क सन्निकट पहुँच जाता है और अपने सभी गीले-शिकवे-शिकायतों को भूला देता है । प्रकृति उनपर जादूई प्रभाव करती है । प्रकृति क बदलते रंग-रुप इन्हें झकझोर कर रख देते है । प्रकृति धर्म माननेवाले आदिवासी प्रकृति क हर बदलते रूप का स्वागत नृत्य से करते है, प्रकृति क अपने स्नेह को प्रकट करेंगे वह भी नृत्यो-गीतों क माध्यम से ।

रात्रि क गहरे सन्नाटे में किलकारियाँ मारकर जब नृत्य मे तल्लिन हो जाता है, वो भूल जाता है उसकी परेशानियॉ, उसकी दरिद्रता, कर्ज का बोजा, पापी पेट का सवाल और महक उठती है, वहाँ की मिट्टी, गुनगुनाने लगते है वहाँ क खेत, नाँच उठते है, गलियारे तथा आँगन और आकार लेने लगता है, स्त्री-पुरुषों का नृत्य, छोटी-सी धारा देखते देखते सागर का विशाल रुप धारण कर लेती है । लोग

इस सागर में डुबकियाँ लेने लगते है । थकेहारे स्त्री-पुरुष इसक माधुर्य से अपनी थकान को मिटाते है। इसी ध्वनि से जवानों में मस्ती छा जाती है, छोटे बालक चंचल हो उठते है, विरही युवक अपने मन की कसक को मिटाते है, बुढ़े-बुजूगों क मन ललचा उठते है, अकेली स्त्रियों क एकांगी जीवन पलभर क लिए रसमयी हो जाते है, पथिको की थकावट मिटती है, किसानों को अपने बड़े-बड़े खेत जोतने की प्रेरणा मिलती है, मजदूरों में काम करने का जोश निर्माण होता है, जीवन जीनेसे कतरानेवालों में नई सीरे से जीवन जीने की उमंग निर्माण होती है ।

आदिवासियों का जीवन नृत्यमय है, ढेर सारे नृत्यों में रचा-बसा । नंदुरबार जिला आदिवासी जिला है । सम्पूर्ण जिले में ८० प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी लोगों की है । इनक विभिन्न अवसरों पर लोकनृत्य का आयोजन किया जाता है ।